11

बिहारी

हिंदी साहित्य में भक्तिकाल के बाद रीतिकाल आता है। रीतिकाल में भक्ति और नीति की धारा तो बनी ही रही, किंतु उसकी कुछ और भी विशेषताएँ थीं– शृंगार-वर्णन, प्रकृति-चित्रण और भाव तथा भाषा का विलक्षण प्रस्तुतिकरण। रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि बिहारी माने जाते हैं। उनकी कविता में इन सभी प्रवृत्तियों की अनोखी छटा मिलती है। अपने अद्‌भुत भाषा-सामर्थ्य से उन्होंने दोहे जैसे छोटे छंद में असीम अर्थ-संभावनाएँ भर दी हैं। इसी गुण के कारण कहा जाता है कि बिहारी ने 'गागर में सागर' भर दिया है।

आइए, इस पाठ में हम कविवर बिहारी की कविता के उक्त गुणों की बानगी देने वाले कुछ दोहों का आनंद लेते हैं।

उददे्श्य

इस पाठ को पढ़कर आप

- भक्ति में अंतरंगता के भाव का उल्लेख कर सकेंगे;
- धन के नशे के विकार पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- प्रकृति-चित्रण के सौंदर्य को उदाहरण देते हुए स्पष्ट कर सकेंगे;
- मुहावरों के काव्यात्मक प्रयोग की सराहना कर सकेंगे;
- कविता में भाषा और अलंकारों के सौंदर्य का उल्लेख कर सकेंगे;
- बिहारी के भाव-सौंदर्य और शिल्प-सौंदर्य पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- समान विषय-वस्तु की अन्य कविताओं का अर्थ तथा व्याख्या कर सकेंगे।

क्रियाकलाप 11.1

आप अनेक दोहे पढ़े चुके हैं। आप जानते हैं कि दोहे में 13-11, 13-11 मात्राओं की

टिप्पणी

यति से चार चरण और दो पंक्तियाँ होती हैं। मात्रा गिनने का तरीका भी आपको पता है, फिर से देखिए–

कब को टेरत दीन रट, होत न स्याम सहाय।
|| || | ||, | | | | |

(कुल तेरह मात्राएँ) (कुल ग्यारह मात्राएँ)

इसी तरह निम्नलिखित दोहों की मात्राएँ गिनिए

(क) कनक-कनक तैं सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाएँ बौरात है, या पाएँ बौराय।।

(ख) सघन कुँज-छाया सुखद, सीतल सुरभि-समीर।
मनु ह्वै जात अजौं वहै, वा जमुना के तीर।।

11.1 मूलपाठ

आइए, एक बार बिहारी के दोहों को शब्दार्थ सहित पढ़ लेते हैं

1. कब को टेरत दीन रट, होत न स्याम सहाय।
तुमहूँ लागी जगत-गुरु, जगन्नाथ - जगवाय।।

2. मकराकृत गोपाल कैं, कुँडल सोहत कान।
धँस्यौं मनौ हिय-घर समर, ड्यौढ़ी लसत निसान।।

शब्दार्थ

टेरत – आवाज़ देता हूँ, पुकारता हूँ
रट – स्वर, बार-बार दुहराना, विनती करना (गिड़गिड़ाना)
स्याम – श्रीकृष्ण
सहाय – सहायता करने वाले, उबारने वाले
तुमहूँ – तुमको भी
जगन्नाथ – जगत के नाथ (स्वामी), भगवान
जगवाय – जग की बाय (हवा), दुनिया की हवा

मकराकृत – मकर (मगरमच्छ) जैसी आकृति वाले
गोपाल – श्रीकृष्ण
कुँडल – कानों में पहनने वाला आभूषण
धँस्यौं – धँस गया (जीत कर कब्ज़ा कर लिया)
मनो – मानो (जैसे कि)
हिय – हृदय (दिल)
समर>स्मर – कामदेव
ड्यौढ़ी – दहलीज़ (प्रवेशद्वार)
लसत – दिखाई देना, नाचना (यहाँ फहराना)
निसान – झंडा, पताका

टिप्पणी

3. जब-जब वै सुधि कीजियै, तब-तब सब सुधि जाँहि।
आँखिन आँखि लगी रहैं, आँखें लागति नाँहि।।

4. कनक कनक तैं सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाएँ बौरात है, या पाएँ बौराय।।

5. सघन कुँज-छाया सुखद, सीतल सुरभि-समीर।
मनु ह्वै जात अजौं वहै, वा जमुना के तीर।।

6. बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करैं, भौंहनु हँसै, दैन कहै नटि जाय।।

7. कहलाने एकत बसत, अहि, मयूर, मृग, बाघ।
जगत तपोवन सौ कियौ, दीरघ-दाघ, निदाघ।।

शब्दार्थ

वै – उस
सुधि – 1. याद (स्मरण) 2. चेतना (होश)
जाँहि – चली जाती हैं।
आँखिन – आँखों से
आँखि – आँख
आँखें लागति
नाँहि – आँख नहीं लगती (नींद नहीं आती)
कनक – 1. सोना (धन) 2. धतूरा (एक मादक फल)
मादकता – नशा
बौरात है – बौराता है।(मदहोश हो जाता है)
बौराय – बौराता है, पागल हो जाता है।

सघन – घना
कुँज – बेल-व क्षों से घिरा स्थान
सुखद – सुख देने वाली
सीतल – शीतल – ठंडी
सुरभि – सुगंधि (त), खुशबू (दार)
समीर – हवा, वायु
मनु – मन
ह्वै जात – हो जाता है
अजौं – आज भी
वहै – वही
वा – उस
तीर – किनारा (तट)

बतरस – बात सुनने (करने) का आनंद
लाल – ललन, नायक (यहाँ श्रीकृष्ण)
मुरली – बाँसुरी
धरी – रख दी
लुकाय – छिपाकर
सौंह करैं – सौगंध लेती है। (कसम खाती है)
भौंहनु – भौंहों में
दैन कहै – देने के लिए कहती है।
नटि जाय – नट जाती है। (मुकर जाती है)
कहलाने – (ताप से) व्याकुल होकर, (गर्मी से) बैचेन होकर
एकत – एक साथ (एक जगह)
बसत – बसते हैं, रहते हैं
अहि – साँप
मयूर – मोर
मग – हिरन
बाघ – शेर
जगत – संसार (दुनिया)
तपोवन – तपस्या करने योग्य स्थान (ऋषियों का आश्रम)
सौ – सो, जैसा
कियौ – कर दिया (बना दिया)
दीरघ – दीर्घ, लंबा, गहरा, भारी
दाघ – ताप
निदाघ – गरमी, ग्रीष्म ऋतु

टिप्पणी

11.2 बोध प्रश्न

1. कवि श्रीकृष्ण को उलाहना क्यों देता है?
2. कृष्ण के कुंडलों की आकृति कैसी है?
3. 'आँख नहीं लगना' का क्या अर्थ है?
4. कवि ने सोने और धतूरे में किसे अधिक मादक बताया है?
5. 'मन यमुना के तट पर आज भी वैसा हो जाता है' कथन से क्या आशय है?
6. राधा (या गोपी) कृष्ण की बाँसुरी को क्यों छिपा देती है?
7. कौन-सी ऋतु संसार को तपोवन-सा बना देती है?

11.3 आइए समझें

आपने भक्तिकालीन कविता पढ़ी है। भक्त भगवान को तरह-तरह से याद करता है। कभी वह उसकी लीलाओं का गान करता है, तो कभी आर्त स्वर में पुकारता है, कभी वह उसका सहचर (मित्र) हो जाता है, तो कभी उसे पति या प्रेमी भाव से याद करता है। भक्ति का एक सोपान वह भी है, जब भक्त भगवान से लगभग बराबरी के स्तर पर बात करने लगता है, उसे उलाहना देने लगता है। यह स्तर अंतरंगता के भाव का है।

ऐसी ही अंतरंग भाव की भक्ति को कवि ने पहले दोहे में दर्शाया है। एक बार इस दोहे को फिर से पढ़िए।

दोहा-1

कब को टेरत दीन रट,
होत न स्याम सहाय।
तुमहूँ लागी जगत-गुरु,
जगन्नाथ–जगवाय।।

संदर्भ

प्रस्तुत दोहा रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि बिहारी के सुप्रसिद्ध काव्य-ग्रंथ 'बिहारी सतसई' से लिया गया है।

व्याख्या-1

कवि कहता है कि मैं कब से तुम्हें दीन स्वर में पुकार रहा हूँ अर्थात् कितने लंबे समय से अपने दुखों का निवारण करने के लिए तुम्हारा स्मरण कर रहा हूँ, पर हे श्रीकृष्ण! तुम मेरी सहायता नहीं करते, मेरे दुखों को दूर नहीं करते। हे ! सारी दुनिया के गुरु, हे! जगत के स्वामी, लगता है कि तुम्हें भी इस संसार की हवा लग गई है। जैसे इस दुनिया में सब लोग अपने आप में मस्त रहते हैं, कोई किसी के दुख में हाथ नहीं बँटाता और अपनी प्रशंसा और प्रभुता का आनंद लेता रहता है, ऐसा ही तुम भी कर रहे हो।

टिप्पणी

1. इस दोहे में 'तुम' और 'जगत-गुरु' संबोधनों तथा 'सांसारिक हवा लगने' के उलाहने से भक्ति के अंतरंग भाव की पुष्टि होती है।

टिप्पणी

2. आपने, संभवतः 'बाय आना' या 'हवा लगना' जैसे प्रयोग सुने होंगे। किसी के व्यवहार में अचानक असामान्य परिवर्तन आने पर यह कहा जाता है। 'नए ज़माने की हवा लगना' भी इसी अर्थ में प्रयोग होता है यानी जब किसी व्यक्ति के आचरण में किसी प्रकार का आकस्मिक परिवर्तन होता है, तब इस मुहावरे का प्रयोग होता है। प्रस्तुत दोहे में इस मुहावरे का सुंदर काव्यात्मक प्रयोग हुआ है।

चित्र 11.2

3. आप जानते हैं कि जहाँ एक वर्ण की निरंतर आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। इस दोहे में 'स्याम सहाय' और 'जगत-गुरु, जगन्नाथ-जगवाय' में क्रमशः 'स' और 'ज' वर्णों की आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार है।

दोहा-2

आइए बिहारी के दूसरे दोहे को पुनः आनंदपूर्वक पढ़ते हैं।

प्रसंग

इस दोहे में भी श्रीकृष्ण की ही चर्चा है, पर कुछ भिन्न रूप में।

व्याख्या

आइए, दोहे की व्याख्या करने से पूर्व कुछ और बातों पर ध्यान दें। क्या आप जानते हैं कि प्रेम और शृंगार की भावना जगाने वाले देवता का नाम 'कामदेव' है। हाँ, यह तो आप ज़रूर जानते होंगे, तो फिर यह भी जान लीजिए कि कामदेव के अनेक नाम हैं, जैसे, मदन, मन्मथ, रतिनाथ, अनंग, स्मर आदि। इस दोहे में 'स्मर' नाम का प्रयोग 'समर' कह कर किया गया है। कामदेव को सबसे बड़ा धनुर्धर माना जाता है, वह ऐसा योद्धा है जो प्रत्येक मनुष्य और देवताओं तक को अपने बाणों से जीतने का सामर्थ्य रखता है। कैसे होंगे भला उसके बाण? उसके बाण अत्यंत कोमल, सुंदर और सुगंधित फूल के समान हैं और उसके ध्वज पर मकर का चिह्न अंकित है। इसीलिए, उसका एक नाम 'मकरध्वज' भी है।

तो, आइए अब इस दोहे को ठीक से समझते हैं।

मकराकृत गोपाल कैं,
कुँडल सोहत कान।
धँस्यौं मनौ हिय–घर समर,
ड्यौढ़ी लसत निसान।।

श्रीकृष्ण के कानों में मकर (मगरमच्छ) की आकृति के कुंडल शोभायमान हो रहे हैं। उन्हें देखकर ऐसा लगता है मानो कामदेव ने उनके हृदय रूपी घर में प्रवेश करके उसे जीत लिया है। यानी उसने कृष्ण के हृदय पर अपना कब्जा जमा लिया है और उनके कानरूपी द्वार पर विजय का प्रतीक यह ध्वज लहरा रहा है। अर्थात् नायिका के रूप-सौंदर्य के विषय में सुनकर नायक के हृदय में उसके प्रति प्रेम का अंकुरण हो गया है।

टिप्पणी

1. यहाँ कृष्ण अवतार के रूप में न होकर श्रृंगार के नायक के रूप में उपस्थित हैं। रीतिकाल की कविता में श्रृंगार-वर्णन के लिए नायक और नायिका के रूप में कृष्ण और राधा को चुना गया है, जो जयदेव की रचना 'गीत गोविंदम्' से चली आ रही परंपरा का ही निर्वाह है। बिहारी ने भी अपने अनेक दोहों में कृष्ण और राधा का इसी रूप में वर्णन किया है।
2. प्रायः कविता में आँखों को शरीर रूपी घर की ड्योढ़ी या दहलीज़ के रूप में वर्णित किया गया है, किंतु यहाँ कान ड्योढ़ी हैं। मन में प्रेम की भावना का उदय होने पर कान की लवें गरम व लाल होने लगती हैं यानी प्रेमोदय का असर व्यक्ति के कान पर लक्षित होता है।
3. यह तो आप जानते ही हैं कि जहाँ उपमेय और उपमान की तुलना के लिए 'मानो', 'मनो', 'मनु' का प्रयोग होता है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इस दोहे में उत्प्रेक्षा अलंकार का सौंदर्य सराहनीय है।
4. आपने यह भी पढ़ा होगा कि जब उपमेय और उपमान में अभेद की स्थिति हो तो उसे 'रूपक' अलंकार के नाम से जाना जाता है। प्रस्तुत दोहे में 'हिय-घर' (हृदय रूपी घर) में रूपक अलंकार है।

पाठगत प्रश्न 11.1

1. 'कब को टेरत...' दोहे में भक्ति का कौन-सा भाव मिलता है।

   (क) दास्य (ख) दैन्य

   (ग) साहचर्य (घ) अंतरंगता
2. 'जगत-गुरु, जगन्नाथ जगवाय' में कौन-सा अलंकार है?
3. कवि ने कृष्ण के कुंडलों की आकृति को मकर जैस क्यों कहा है?
4. 'धँस्यौ मनौ हिय-घर समर' में कौन-सा अलंकार है–

   (क) संदेह (ख) भ्रांतिमान

   (ग) उपमा (घ) उत्प्रेक्षा

क्रियाकलाप 11.2

सामान्यतः सभी के जीवन में ऐसे क्षण आते हैं जब व्यक्ति को किसी की याद सताती है, वह उसकी याद में डूबा रहता है। आपके जीवन में भी ऐसी स्थितियाँ आई होंगी। ऐसे में मन में क्या-क्या भाव उठते हैं और इस स्थिति का दिनचर्या पर क्या प्रभाव पड़ता है, कुछ पंक्तियों में लिखिए।

....

टिप्पणी

.....

.....

.....

दोहा-3

आइए, अब देखें कि बिहारी अपने प्रिय की याद आने के प्रभाव का किस तरह वर्णन करते हैं। तीसरे दोहे को पुनः पढ़ लीजिए।

प्रसंग : प्रस्तुत दोहे में बिहारी ने नायिका/नायक की याद में डूबे हुए नायक/नायिका का वर्णन किया है।

व्याख्या

ज़रा ध्यान दीजिए, इस दोहे की दोनों पंक्तियों के दूसरे चरण में पहले चरण की बात का निषेध दिखाई पड़ता है– *'सुधि कीजिए'* – *'सुधि जाँहि'* और *'आँखि लगी रहै'* – *'आँखें लागति नाँहि'* कवि ने 'सुधि' और 'आँख लगना' की भिन्न अर्थ–छवियों का बहुत सुंदर प्रयोग करते हुए इस दोहे में अर्थ-चारुत्व उत्पन्न किया है। 'सुधि' शब्द का अर्थ है – स्मरण, याद और दूसरा व्यापक अर्थ है – चेतना, होश। इसी तरह आप 'आँख लगना' मुहावरे का अर्थ जानते ही हैं – किसी भी वस्तु या उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित करना या किसी से प्रेम होना और दूसरे अर्थ में भी प्रयोग सुना या पढ़ा ही होगा – 'आँख लग गई', जिसका अर्थ है सोना। इस प्रकार 'आँखें लागति नाहिं' का अर्थ हुआ – नींद नहीं आती।

जब-जब वै सुधि कीजियै,
तब-तब सब सुधि जाँहि।
आँखिन आँखि लगी रहै,
आँखें लागति नाँहि।।

आइए, अब इस दोहे की व्याख्या करते हैं।

विरहग्रस्त नायक या नायिका अपने सखी या सखा से अपनी मनोदशा का वर्णन करता/करती है– जब-जब मुझे अपने प्रिय की याद आती है तो मैं अपनी सुधबुध भूल जाती हूँ। यानी उनका स्मरण करते ही मैं अपनी सारी चेतना, सारी सुधबुध गँवा बैठती हूँ। मेरी आँखें उसकी आँखों में ही उलझी रहती हैं। अर्थात् मेरा ध्यान उसकी आँखों में ही लगा रहता है, फलस्वरूप मुझे नींद भी नहीं आती। यह अर्थ नायिका के पक्ष में है। इसी तरह, इसके विपरीत नायक के पक्ष में भी यही अर्थ किया जा सकता है।

टिप्पणी

1. 'आँख लगना' मुहावरे की दोनों अर्थ-छवियों का एक ही पंक्ति में प्रयोग सराहनीय है।
2. 'सुधि' शब्द तथा 'आँख लगना' मुहावरे का दो-दो बार लेकिन भिन्न अर्थों में प्रयोग होने के कारण यहाँ 'यमक' अलंकार है।
3. 'जब-जब', 'तब-तब-सब' और 'आँखिन आँखि' में क्रमशः 'ज', 'ब' और 'आँ' की आवृत्ति होने से 'अनुप्रास' अलंकार है।
4. दोहे की दोनों पंक्तियों के पहले चरण और दूसरे चरण की बातें परस्पर

विरोधी लगती हैं, पर हैं नहीं। आप जानते होंगे कि जहाँ विरोध न होने पर भी विरोध का आभास होता है, वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है।

5. प्रस्तुत दोहे की तुलना कबीर की इस पंक्ति से की जा सकती–

सिर राखे सिर जात है सिर काटे सिर होय।

(अहंकार होने पर सम्मान और प्रसिद्धि जाती रहती है और अहंकार को त्याग देने पर ख्याति और सम्मान प्राप्त होता है)

पाठगत प्रश्न 11.2

उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्न का सही उत्तर दीजिए:

1. 'तब तब सब सुधि जाँहि' का अर्थ है–
   (क) प्रिय व्यक्ति की सारी यादें चली जाती हैं।
   (ख) प्रिय के अतिरिक्त सभी की याद आती है।
   (ग) किसी भी बात का होश नहीं रहता।
   (घ) प्रिय की याद में सुध-बुध खो जाती है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

2. 'आँख लगना' मुहावरे के कौन-कौन से दो अर्थ हैं?
3. इस दोहे में किस कारण से यमक अलंकार है?

क्रियाकलाप 11.3

आप जानते हैं कि नशा बुरा होता है। शराब, अफ़ीम, चरस, गाँजा आदि मादक द्रव्यों के सेवन से तो आदमी को नशा होता ही है, पर धन, शक्ति और सत्ता भी व्यक्ति को मदमस्त कर देते हैं। आपने अपने आस-पास ऐसे लोग अवश्य देखे होंगे। धन के नशे में चूर किसी व्यक्ति के आचरण पर कुछ पंक्तियाँ यहाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

दोहा-4

आइए, अब बिहारी का अगला दोहा पढ़ते हैं–

प्रसंग : प्रस्तुत दोहे में कवि ने अचानक धन प्राप्त होने वाले व्यक्ति के नशे का वर्णन

टिप्पणी

किया है। कवि का कहना है कि यह नशा मादक पदार्थों के सेवन से होने वाले नशे से सौ गुना अधिक खतरनाक होता है।

व्याख्या

इस दोहे में 'कनक' शब्द पर ध्यान दें, जिसका प्रयोग दो बार किया गया है। आप जानते हैं कि कनक का अर्थ होता है– सोना। पहले 'सोना' शब्द का प्रयोग मात्र एक धातु के लिए ही नहीं किया जाता था, बल्कि वह धन-दौलत के पर्याय के रूप में भी होता था। आप जानते ही होंगे कि पुराने समय में मुद्रा के रूप में सोने का चलन होता था। अन्य प्रकार की (कागज़ आदि) मुद्रा के चलन के बाद भी सोने का महत्त्व धन-संपत्ति के रूप में बना रहा है। सोने के अतिरिक्त 'कनक' शब्द का एक और अर्थ है, और वह है–धतूरा। धतूरा एक प्रकार का फल होता है, जिसे खाने से नशा हो जाता है।

एक और शब्द 'बौरात' या 'बौराय' पर ध्यान दीजिए। 'बौराना' का अर्थ होता है–मस्तिष्क की वह अवस्था जिसमें आदमी बहकी-बहकी बातें करता है यानी उसका व्यवहार सामान्य नहीं रहता। नशे की तरंग में उसकी सहजता नष्ट हो जाती है और सोचने-विचारने की शक्ति समाप्त हो जाती है। इसी को मदहोश या मदमस्त होना भी कहते हैं। सामान्य व्यवहार में 'बौराना' शब्द का प्रयोग 'पगलाना' या 'पागल होना' के अर्थ में भी किया जाता है।

कनक कनक तैं सौगुनी,
मादकता अधिकाय।
वा खाएँ बौरात है,
या पाएँ बौराय।।

आइए, अब दोहे को पुनः दोहरा लेते हैं और व्याख्या पढ़ते हैं:

प्रस्तुत दोहे में कवि कहता है कि सोने में धतूरे से सौगुना अधिक नशा होता है, क्योंकि धतूरे के तो खाने से आदमी मदहोश होता है जबकि सोने के मिलने पर उसकी स्थिति इससे भी बुरी हो जाती है, अर्थात् धन की मादकता इसलिए अधिक है क्योंकि उसका प्राप्त होना ही सिर चढ़कर बोलने लगता है, जबकि मादक द्रव्य तो सेवन करने पर ही (और वह भी थोड़े समय के लिए) आदमी का सिर घुमाते हैं। अतः धन का नशा अन्य सभी नशों से अधिक और ख़तरनाक होता है। मादक पदार्थों का नशा उन्हें सेवन करने के कुछ समय बाद उतर जाता है किंतु सोने (धन) का नशा बना ही रहता है और जीवन की अन्य गतिविधियों पर उसका चढ़ा हुआ रंग तरह-तरह से दिखाई देता है।

टिप्पणी

1. प्रस्तुत दोहे में मनुष्य के व्यवहार पर धन के कुप्रभाव को बहुत अच्छे ढंग से व्यक्त किया गया है। साथ ही, यह नीतिगत संकेत भी है कि धन-दौलत, सुख-संपत्ति पाने पर मनुष्य को अपने व्यवहार को नियंत्रित रखने की अधिक आवश्यकता होती है।
2. कवि ने 'कनक' शब्द का प्रयोग दोनों बार भिन्न अर्थों ('सोना' और 'धतूरा') में किया है। आप समझ ही गए होंगे कि यहाँ 'यमक' अलंकार का सौंदर्य है।

दोहा-5

आप जानते हैं कि कृष्ण गोकुल में सभी गापियों को बहुत प्रसन्न रखते थे। बाद में जब वे गोकुल छोड़कर मथुरा चले गए तब सभी गोपियाँ उनकी याद में बहुत दुखी रहती थीं। परंतु जब भी वे कृष्ण को, उनकी पुरानी बातों को याद करतीं, तब कुछ समय के लिए खुश हो जाती थीं।

प्रसंग

प्रस्तुत दोहे में कोई गोपी अपनी सखी से कहती है कि उस यमुना के तट पर पहुँचकर मेरा मन आज भी वही, वैसा ही हो जाता है। वहाँ घने कुंजों की छाया अत्यंत सुखदायी लगने लगती है तथा सुगंधित वायु बहुत शीतलता प्रदान करने लगती है।

व्याख्या

इस दोहे की व्याख्या के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण शब्द 'वहै' (वही) है। कवि यह न बताकर कि मन ऐसा हो जाता है, पाठक के सामने अर्थ-विस्तार की अनंत संभावनाएँ छोड़ देता है। 'वही' का प्रसंग है– वैसा, जैसा कि प्रसंग है उस समय जब कृष्ण ब्रज में ही थे।

सघन कुंज-छाया सुखद,
सीतल सुरभि समीर।
मनु ह्वै जात अजौं वहै,
वा जमुना के तीर।।

चित्र 11.3

कुल मिलाकर अर्थ हुआ कि मन जैसा कृष्ण के यहाँ होते, उनके साथ रहते हुए होता था, आज भी वैसा ही हो जाता है। अब देखिए, 'वैसा' अर्थात् 'कृष्ण के साथ रहते जैसा' में जो अर्थ संभावनाएँ मौजूद हैं वे किसी एक, दो या कुछ बातों के बताने पर सीमित नहीं हो जातीं? आप अनुमान लगाएँ कैसा लगता होगा गोपी को? वह कृष्ण के साथ है उनसे बात कर रही है, उनके साथ खेल रही है, कृष्ण बाँसुरी बजा रहे हैं, गोपियाँ उमंग और उल्लास से भरी हैं, गोपियों के साथ कृष्ण रास–नृत्य कर रहे हैं,..... वगैरह–वगैरह। यानी गोपी कहना चाहती है कि वे तमाम सुखद क्षण उसे अपने में फिर से डुबो लेते हैं, जो उसने कभी कृष्ण के साथ बिताए थे। कृष्ण के विरह में गोपी को कलेजे में टीस का अनुभव होता है। हवा भी अच्छी नहीं लगती, परंतु जब वह कुंजों की छाया में कृष्ण के साथ बिताए अपने पुराने दिन याद करती है, तब सभी कुछ भूलकर कृष्ण में पुनः डूब जाती है।

उसे यमुना के तट पर पहुँचकर कृष्ण की केवल याद भर नहीं आती, जो कलेजे को टीस पहुँचाए और छाया भी जलाने वाली नहीं लगती, सुगंधित हवा भी तन-मन को विरह ताप से झुलसाने वाली नहीं लगती; बल्कि यमुना-तट की ये स्मृतियाँ इतनी सघन, सुखद और मधुर हैं कि वे उसे 'आज' से मुक्त करती हैं और उसके दिल–दिमाग को उसी काल खंड में ले जाती हैं जब वह उमंग और उल्लास से भरी कृष्ण के साथ होती थी। इस तरह वह आज भी विरहग्रस्त न होकर कृष्ण के सानिध्य को प्राप्त करने वाली हो जाती

टिप्पणी

है। इस कारण, विरह में जो सघन कुंज-छाया पीड़ा देती थी, वह सुखद लगने लगती है और जो सुगंधित वायु शरीर को झुलसाती-सी लगती थी, अब शीतल लगने लगती है।

टिप्पणी

1. 'मन ह्वै जात अजौं वहै' में 'वहै' का वक्रोक्ति-सौंदर्य सराहनीय है। बात को सीधे-सीधे न बताकर उसमें असीम संभावनाओं को पिरो दिया गया है। बिहारी के एक और दोहे की यह पंक्ति देखिए, जिसमें 'और कुछ' के द्वारा यही काम किया गया है–

   वह चितवन औरै कछु, जिहि बस होत सुजान

2. 'सीतल-सुरभि समीर' में तो आपको बताने की आवश्यकता ही नहीं है कि कौन-सा अलंकार है, आप स्वतः ही समझ गए होंगे न। जी हाँ, 'स' की आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार ही है।

3. कवि ने 'जमुना के तीर' न कहकर 'वा जमुना के तीर' कहा है। यह 'वा' यानी यमुना किनारे का वह (निश्चित) स्थान, जहाँ कृष्ण गोपी मिलते थे। इसी संकेत के कारण वह सुनने-पढ़ने वाले 'वहै' की अर्थ-संभावनाएँ समझ पाते हैं।

पाठगत प्रश्न 11.3

1. निम्नलिखित में से सही और गलत कथनों का चुनाव कीजिएः

   (क) धन का नशा मादक द्रव्यों से भी बढ़कर होता है।

   (ख) सोना पाने की बजाय धतूरा खाना ज़्यादा फ़ायदेमंद है।

   (ग) सोना और धतूरा दोनों ही मदहोश कर देने वाले होते हैं।

   (घ) धतूरे की मादकता सोने से सौगुनी ज़्यादा होती है।

2. 'कनक-कनक तैं.....' में कौन-सा अलंकार है?

3. 'मनु ह्वै जात अजौं वहै'; से अभिव्यक्त होता है कि 'मन का भाव कैसा है कवि–

   (क) यह बता नहीं पा रहा है।

   (ख) यह बताना नहीं चाहता।

   (ग) किसी परिचित को ही बताता है।

   (घ) यादों में डूबने की स्थिति का संकेत करता है।

4. 'सघन कुंज-छाया सुखद सीतल सुरभि समीर' दोहे में अनुप्रास कहाँ और क्यों है, उल्लेख कीजिए।

दोहा-6

मूल पाठ में दिए गए दोहे को ध्यान से पढ़िए, साथ में कुछ कठिन शब्दों के अर्थ फिर से पढ़ लीजिए। अब दिए गए स्थान पर इसका प्रसंग स्वयं लिखिए।

प्रसंग

.....

.....

.....

इसकी व्याख्या करने का प्रयास कीजिए। आपकी सहायता के लिए कुछ संकेत प्रस्तुत हैं–

गोपियों को कृष्ण से बात करना अच्छा लगता है, कोई एक उनकी बाँसुरी को छिपा देती है, कृष्ण उसे कसम देते हैं तो वह भौंहों में मुस्कराती है, वापस देने की बात कहकर फिर मुकर जाती है।

आप बिहारी के कई दोहों की व्याख्या पढ़ चुके हैं। यह दोहा सरल भाषा में सरल भाव वाला है। संकेत आपको मिल ही गए, तो फिर क्या देर... उठाइए कागज़-कलम और लिख डालिए इसकी सुंदर-सी भावपूर्ण व्याख्या।

बतरस लालच लाल की,
मुरली धरी लुकाय।
सौंह करैं, भौंहनु हँसै,
दैन कहै, नटि जाय।।

क्रियाकलाप 11.4

चित्र 11.4 **चित्र 11.5**

ऊपर दिए गए दोनों चित्रों को ध्यानपूर्वक देखिए और लिखिए कि दोनों में क्या अंतर है और क्यों?

.....

.....

.....

.....

.....

टिप्पणी

दोहा-7

अब ज़रा बिहारी के प्रकृति-चित्रण वाले दोहे को शब्दार्थ सहित पढ़िए। हाँ, क्या गौर किया 'कहलाने' शब्द पर। 'कहलाने' शब्द का अर्थ 'कहलाने भर के लिए' नहीं है। यहाँ 'कहलाने' का अर्थ है–व्याकुल होकर कहना। 'कहलाना' क्रिया-शब्द का ब्रजभाषा में इसी अर्थ में प्रयोग होता है।

तपोवन की विशेषता क्या होती है, जानते हैं न। पढ़ा ही होगा ऋषियों-मुनियों के संदर्भ में इस शब्द को। जी हाँ, वही होता था तपोवन, जहाँ ये लोग तपस्या करते थे और जहाँ किसी भी किस्म की हिंसा वर्जित होती थी।

आपने पढ़ ही लिया होगा कि दाघ का अर्थ होता है ताप और निदाघ का गरमी। अब 'दीरघ' यानी 'दीर्घ' पर विचार कीजिए। 'दीर्घ' का अर्थ है – लंबा, विस्तृत, गहरा, भारी .....। अब आप इन शब्दों में से उपयुक्त शब्द का चुनाव कीजिए या मिलते-जुलते अर्थ वाले किसी और ऐसे शब्द को चुनिए जो ताप के विशेषण के तौर पर प्रयोग किया जा सके।

कहलाने एकत बसत
अहि, मयूर, म ग, बाघ।
जगत तपोवन सौ कियौ,
दीरघ–दाघ, निदाघ।।

अगर आप मूलपाठ से शब्दार्थ जान चुके हैं और इन संकेतों को भी पढ़ चुके हैं, तो इस दोहे की व्याख्या करने में कोई मुश्किल नहीं आएगी। पकड़िए कागज़-कलम और शुरू हो जाइए। पहले प्रसंग लिखिए और फिर उसकी व्याख्या लिख दीजिए।

पाठगत प्रश्न 11.4

1. गोपी कृष्ण से बाँसुरी देने की बात कहकर भी क्यों मुकर जाती है?
2. कसम खाते समय भौंहों में हँसने का क्या अभिप्राय है?
3. कवि ने जगत को तपोवन-सा क्यों कहा है?
4. 'दीरघ-दाघ निदाघ' में अलंकार है–

   (क) श्लेष (ख) उपमा

   (ग) यमक (घ) अनुप्रास

11.4 भाव और शिल्प सौंदर्य

आपने बिहारी के कुछ दोहों का अध्ययन किया। आपने अनुभव किया होगा कि कविवर बिहारी ने भक्तिकालीन कविता से थोड़ा अलग हटकर, नितांत अनौपचारिक ढंग से, लगभग मित्रता के भाव से कृष्ण का स्मरण किया है। इसके अतिरिक्त उनकी कविता में कृष्ण शृंगार रस के नायक के रूप में भी उपस्थित हैं। रीतिकाव्य में प्रायः कृष्ण इसी रूप में मिलते हैं। रीतिसिद्ध बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। रीतिकाव्य की प्रमुख प्रवृत्ति शृंगार-वर्णन है। उसके विविध रूपों की अत्यंत सुंदर अभिव्यक्ति उनके काव्य में हुई है। शृंगार के संयोग और वियोग, दोनों पक्षों की प्रस्तुतियाँ मन को छू लेने वाली हैं। उनके काव्य की यही प्रमुख विशेषता है। इसके

लिए बिहारी ने नायक-नायिका की विभिन्न दैनिक गतिविधियों को ही आधार बनाया है। प्रायः घर भर की उपस्थिति में अपने अनुराग को व्यक्त करने अथवा उसकी अनुभूति के चित्र उनकी कविता में मिलते हैं। आप, संभवतः उनके इस प्रसिद्ध दोहे से परिचित होंगे, जिसमें समस्त गुरुजन की उपस्थिति में नायक-नायिका नेत्रों से ही सारा वार्तालाप कर लेते हैं–

कहत, नटत, रीझत, खिजत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौंन में करत हैं, नैननु ही सौं बात।।

आपने देखा कि किस दक्षता के साथ बिहारी ने एक ही पंक्ति में सात क्रियाओं का वर्णन किया हैं। उनका यह दोहा शिल्प की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। भाषा के प्रयोग का भी अद्भुत उदाहरण है। ऐसे ही प्रयोग के कारण कहा जाता है कि बिहारी ने 'गागर में सागर' भर दिया है।

भक्ति और श्रृंगार के अतिरिक्त बिहारी ने नीति-काव्य भी लिखा है, पर प्रकृति-चित्रण के जितने सुंदर दोहे उन्होंने लिखे हैं, अन्यत्र दुर्लभ हैं। यद्यपि रीतिकाव्य में प्रकृति के बहुत सुंदर चित्र मिलते हैं, पर वे प्रायः कवित्त, सवैया जैसे छंदों में हैं, जहाँ वर्णन के लिए दोहे की तुलना में अधिक शब्द और पंक्तियाँ होती हैं। प्रकृति के कोमल, रुचिकर रूपों के साथ-साथ उन्होंने प्रचंड रूप का भी वर्णन किया है। ऐसा एक दोहा तो आपने पढ़ा ही है, यहाँ एक और देखिए–

जा बैठी अति सघन वन, पैठि सदन तन माँह।
देखि दुपहरी जेठ की, छाँहों चाहति छाँह।।

कितनी सुंदर कल्पना है कि जेठ की धूप की तीव्रता से घबराकर छाया तक घने जंगल में जाकर छिप गई है, अब वह हर पेड़ के नीचे नहीं रहती।

कवि बिहारी जीवन के विविध अनुभवों से तो संपन्न थे ही, वे आयुर्वेद, ज्योतिष, राजनीति आदि अनेक शास्त्रों के भी ज्ञाता थे। उनके अनेक दोहों में उनके इस ज्ञान की छाप मिलती है। विशेषतः ज्योतिष आधारित दोहे तो अत्यंत सराहनीय हैं।

भाषा

बिहारी ने अपनी समस्त रचनाएँ दोहा छंद में की हैं और उनकी भाषा ब्रजभाषा है। प्रायः समस्त रीतिकाव्य ब्रजभाषा में ही रचा गया है। अपने माधुर्य के कारण ब्रजभाषा श्रृंगार और प्रकृति-चित्रण के लिए उपयुक्त भी है। बिहारी के भाषा-प्रयोग में बहुत व्यापकता है। संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों से लेकर आम बोलचाल के शब्दों तक का प्रयोग उन्होंने किया है। लोक में प्रचलित मुहावरों का अत्यंत सटीक प्रयोग उनकी काव्य-भाषा की विशेषता है। लेकिन सबसे अधिक सराहनीय है, उनकी भाषा की लाक्षणिकता यानी सामान्य से लगने वाले वर्णन में निहित अर्थ-चारुत्व और अनेक अर्थों की संभावना। इसी कारण, विद्वानों ने एक-एक दोहे के अनेक अर्थ अथवा अनेक अर्थ-छवियाँ प्रस्तुत की हैं, उदाहरण के लिए उनका यह दोहा देखिए

मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाईं परै, स्याम हरित दुति होइ।।

टिप्पणी

इस दोहे की दूसरी पंक्ति के अनेक अर्थ हो सकते हैं–जिस तन (राधा के) की झलक-मात्र से कृष्ण प्रसन्न हो जाते हैं; राधा के सोने जैसे रंग की परछाईं से नील-वर्ण कृष्ण हरे दिखाई पड़ते हैं आदि।

यह तो आप इस पाठ में पढ़े दोहों से जान चुके होंगे कि कवि बिहारी ने अनुप्रास, यमक, श्लेष, उत्प्रेक्षा, रूपक, वक्रोक्ति, पुनरुक्ति आदि अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया है। इनके अतिरिक्त उन्होंने संदेह, भ्रांतिमान, वीप्सा, व्याज-स्तुति, दृष्टांत, विभावना आदि बहुत से अलंकारों का अद्‌भुत प्रयोग किया है। भाषा की आलंकारिकता उनके काव्य की प्रमुख विशेषताओं में शामिल है।

11.5 आइए, स्वयं पढ़ें

आप बिहारी के दोहों का भली-भाँति अध्ययन कर चुके हैं। आइए, अब रीतिकाल के ही एक और कवि रसलीन के दो दोहों का आनंद लेते हैं–

दोहे

1. गवन समय पिय के कहति, यौं नैनन सौं तीय।
रोवन के दिन बहुत हैं, निरखि लेहु खिन पीय।।

2. अमी हलाहल मद भरे, सेत, स्याम, रतनार।
जियत, मरत, झुकि-झुकि परत, जेहि चितवत इक बार।।

शब्दार्थ

गवन समय	–	जाते समय
यौं	–	इस प्रकार, यह
तीय	–	स्त्री, पत्नी (नायिका)
निरखि लेहु	–	देख लो
खिन	–	क्षण भर, ज़रा, थोड़ा-सा
अमी	–	अमत
हलाहल	–	विष
मद	–	नशा, मस्ती, शराब
सेत>श्वेत	–	सफ़ेद
स्याम(श्याम)	–	काले
रतनार	–	लाल
जेहि	–	जिसे भी
चितवन	–	देखते हैं

आपने दोहे पढ़े। यह तो आप समझ ही गए होंगे कि पहले दोहे में विदाई का दृश्य है, तो फिर यह तो समझना बहुत ही आसान है कि यह दृश्य क्या है? कौन विदा हो रहा है? किससे विदा हो रहा है? रो कौन रहा है? नायिका नेत्रों से क्या कह रही है? इन संकेतों के सहारे आप दोहे के अर्थ को भली-भाँति समझ सकते हैं। एक बार फिर से इस दोहे को पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. नायिका पति से किस प्रकार संवाद करती है?
2. नायिका अपने पति से क्या कहती है?
3. दोहे के भावगत सौंदर्य का उल्लेख कीजिए।
4. 'रोवन के दिन बहुत हैं' कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

दूसरे दोहे में यद्यपि उल्लेख नहीं किया गया है, पर आप समझ सकते हैं कि बात आँखों के सौंदर्य की हो रही है। कैसी हैं ये आँखें – सफ़ेद, काली और लाल। कवि ने इन रंगों से साम्य रखने वाले तीन पदार्थों की कल्पना की है - अमृत, विष और मदिरा। इनके प्रभावों से युक्त मानी हैं नायिका की आँखें। रसलीन का यह दोहा हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि माना जाता है। उपर्युक्त संकेतों के साथ दोहे को फिर से

पढ़िए और दोहे में निहित अर्थ-सौंदर्य का आनंद लेते हुए निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. कवि ने नायिका के नेत्रों के रंग में किन-किन चीज़ों की कल्पना की है?
2. 'रतनार' शब्द के प्रयोग से कवि नायिका के नेत्रों की किस विशेषता को प्रकट करना चाहता है?
3. नायिका जिस किसी की ओर एक नज़र देखती है, उस पर क्या प्रभाव पड़ता है?
4. 'झुकि-झुकि परत' से क्या आशय है?
5. दोहे के भावगत सौंदर्य का उल्लेख कीजिए।

11.6 आपने क्या सीखा

1. बिहारी रीतिकाल के सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रतिनिधि कवि हैं।
2. उन्होंने शृंगार, भक्ति, नीति और प्रकृति-चित्रण से संबंधित अत्यंत सुंदर दोहों की रचना की है।
3. शृंगार के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का चित्रण करते समय बिहारी ने नायक-नायिका की दैनिक गतिविधियों को चुना है।
4. घर के भीतर अपने प्रेम को व्यक्त करने तथा दूसरे को देखते ही प्रेम की अनुभूति होने के चित्र बिहारी के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं।
5. बिहारी के भक्ति परक दोहे भक्तिकालीन काव्य से अलग हटकर हैं। उन्होंने सख्य भाव से अत्यंत अंतरंगता के साथ कृष्ण का स्मरण किया है।
6. कृष्ण उनके काव्य में शृंगार के नायक के रूप में भी उपस्थित हैं।
7. बिहारी ने प्रकृति के कोमल और रुचिकर रूपों के साथ-साथ उसके प्रचंड रूपों का भी सुंदर वर्णन किया है।
8. बिहारी के काव्य में तत्सम शब्दों से लेकर ठेठ ग्रामीण शब्दों तक का प्रयोग हुआ है।
9. लोक में प्रचलित मुहावरों का काव्यात्मक प्रयोग करने में बिहारी दक्ष हैं।
10. बिहारी के दोहों में अनेक अर्थों तथा अर्थ-छवियों की संभावना रहती है, जिसके कारण उनके विषय में कहा जाता है कि बिहारी ने 'गागर में सागर' भर दिया है।
11. आलंकारिकता बिहारी की भाषा की प्रमुख विशेषता है। उन्होंने अपने काव्य में अनेक अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया है।
12. बिहारी ने अपनी रचनाओं में लाक्षणिक भाषा का प्रयोग किया है अर्थात् उनके सामान्य से दीखने वाले शब्द-प्रयोग और उक्तियाँ अपने में विशिष्ट अर्थ-संकेतों को व्यक्त करने की सामर्थ्य रखती हैं।

11.7 योग्यता विस्तार

कवि परिचय

कविवर बिहारी लाल रीतिकाल के सुप्रसिद्ध और चर्चित कवि हैं। उनकी विशेषता रही

है कि वे शृंगार, भक्ति, नीति और प्रकृति संबंधी गहरी बातों से लेकर लोक-व्यवहार संबंधी ज्ञान रखते हैं। कवि बिहारी ने 'बिहारी सतसई' की रचना की है जिसमें लगभग सात सौ दोहे हैं। इसका प्रथम दोहा है : *'मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोई'। यह* दोहा उन्होंने मंगलाचरण के रूप में लिखा है। बिहारी राधावल्लभ संप्रदाय के अनुयायी थे, अतः उन्होंने इसमें राधा को अधिक महत्त्व दिया है और उनसे सांसारिक बाधाओं के निवारण की प्रार्थना करते हुए अपनी काव्य–रचना को निर्विघ्न समाप्त कर पाने के वरदान का निवेदन किया है।

- बिहारी सतसई एक शृंगार-प्रधान रचना है, जिसके नायक प्रायः कृष्ण तथा नायिका प्रायः राधा को माना है।
- 'बिहारी सतसई' पुस्तकालय से प्राप्त कीजिए और उसके अन्य दोहे पढ़ने का प्रयास कीजिए।
- रीतिकाल के अन्य कवियों में देव, मतिराम, चिंतामणि आदि की रचनाएँ पढ़िए।

11.8 पाठांत प्रश्न

1. कवि ने क्यों कहा है कि ईश्वर को दुनिया के आम आदमी की हवा लग गई है?
2. कवि ने कान रूपी ड्योढ़ी की कल्पना क्यों की है?
3. 'मादक पदार्थों से सौगुना नशा धन का होता है,' उदाहरण देकर कथन की पुष्टि कीजिए।
4. पाँचवे दोहे में 'वा जमुना के तीर' से कवि का क्या आशय है, स्पष्ट कीजिए।
5. निम्नलिखित दोहों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

   (क) कनक कनक तैं सौगुनी, मादकता अधिकाय।
   वा खाएँ बौरात है, या पाएँ बौराय।।

   (ख) मकराकृत गोपाल कैं, कुँडल सोहत कान।
   धँस्यौ मनौ हिय-घर समर, ड्यौढ़ी लसत निसान।।

   (ग) कहलाने एकत बसत, अहि, मयूर, मृग, बाघ।
   जगत तपोवन सौ कियौ, दीरघ-दाघ, निदाघ।।

6. कामदेव के कोई चार नाम लिखिए।
7. निम्नलिखित पंक्तियों में विरोधाभास अलंकार किस प्रकार है, सिद्ध कीजिए:
   जब-जब वै सुधि कीजियै, तब-तब सब सुधि जाँहि।
   आँखिन आँखि लगी रहै, आँखें लागति नाँहि।।
8. कविवर बिहारी ने अपने काव्य में लोकोक्तियों और मुहावरों का सटीक प्रयोग किया है, सिद्ध कीजिए।
9. निम्नलिखित दोहों को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:
   1. प्रीतम छवि नैनन बसी, पर छवि कहाँ समाय।
   भरी सराय रहीम लखि, आपु पथिक फिरि जाय।।

2. जैसी परै सो सहि रहै, कहि रहीम यह देह
धरती ही पर परत है, सीत, घाम और मेह।

(क) कवि ने 'प्रीतम' शब्द किसके लिए प्रयोग किया है?

(ख) 'पर छवि कहाँ समाय' से कवि का क्या तात्पर्य है?

(ग) दूसरे दोहे में कवि ने किसकी महिमा बताई है?

(घ) कवि ने 'देह' की तुलना 'धरती' से क्यों की है?

11.9 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ईश्वर की बहुत दिनों से प्रार्थना करने पर भी कवि के दुख दूर नहीं हो रहे हैं।
2. मगरमच्छ जैसी
3. नींद न आना
4. सोने को
5. जैसा कि कृष्ण की उपस्थिति में हुआ करता था
6. उनसे बातें करने का आनंद प्राप्त करने के लिए
7. ग्रीष्म ऋतु

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

11.1 1. (घ) 2. अनुप्रास

3. कामदेव का एक नाम 'मकरध्वज' होने के कारण

4. (घ)

11.2 1. (घ) 2. एक–प्रेम हो जाना, दूसरा – नींद आ जाना

3. 'आँख लगना' मुहावरे का दो अर्थों में प्रयोग होने के कारण

11.3 1. (क) सही (ख) गलत (ग) सही (घ) गलत

2. यमक

3. (घ)

4. सुखद सीतल सुरभि समीर में 'स' वर्ण की आवृत्ति होने के कारण

11.4 1. बातें करने से मन न भरने के कारण

2. बाँसुरी उसी के पास है और हँसते हुए मना कर रही है।

3. ग्रीष्म ऋतु होने के कारण सभी त्रस्त हैं और कुछ भी करने का मन न होने के कारण वे अपने शिकार तक में दिलचस्पी नहीं ले रहे।

4. (घ)